नोट्स

स्नातक खण्ड - III, भूगोल (प्रतिष्ठा)

पत्र - IV

Unit - I

भूगोल में कार्ल रिटर का योगदान / विचार धारा ?

1779 to 1960

कार्ल रिटर को आधुनिक भूगोल की नींव के पत्थर या भवन के स्तम्भ कह सकते हैं। रिटर बचपन से ही प्रकृति प्रेमी थे। 19 वीं शताब्दी के अन्त में प्रत्यक्ष विश्वास से हम्बोल्ट की अपेक्षा रिटर का योगदान अधिक था क्योंकि वे पूरे काल विश्वविख्यात से सम्मिलित रहे। रिटर बर्लिन में 40 वर्ष तक प्राध्यापक रहे। जर्मनी, फ्रॉंस एवं अन्य यूरोपीय देशों में फैले उनके शिष्यों ने उनके भौगोलिक चिन्तन को बहुत अधिक फैलाया। उनके चिंतन में पृथ्वी की एकता, प्रादेशिक एकता एवं नियतिवाद का विचार धारा काफी महत्व रहा। रिटर का निधन पर 28 मई 1960 को रायल भूगोल सोसाइटी (Royal Geographical Society) लन्दन के अध्यक्ष ने विभिन्न प्रकार से श्रद्धांजलि अर्पित की :- the labour of Carl Ritter are characterised by great industry.

शैक्षा यात्रा एवं अध्ययन :- 1779 ई० में जर्मनी ने जन्में कार्ल रिटर की शिक्षा प्रकृति सौन्दर्य में हुआ। वे रूसो और पेस्टालोजी (Pestalozzi) दर्शन से प्रभावित थे। जहाँ विद्यार्थियों को देहातों में प्रकृति के बीच में भ्रमण कराया जाता है। बाद में वे लेहरी विश्वविद्यालय में गये और फ्रेंकफर्ट में धनी परिवार से सम्बंधित होकर पश्चिमी देशों की यात्रा की थी। इन्होनें यूरोप के इतिहास और भूगोल पर दो ग्रन्थ लिखें। सांख्यिकी की आधार पर यूरोप के 6 मानचित्र बनाये। 1806 ई० में विधि तंत्र पर आधारित प्राकृतिक भूगोल पर घटनाओं पर आधारित New Geography नामक पुस्तक लिखी। वर्ष 1819 में उनका प्रसिद्ध पुस्तक 'अर्द्ध कुण्डे' (ERD KUNDE) का प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ उन्होनें अपने जीवन काल में कई रचनाएं लिखि जिसमें प्रमुख हैं :-

(i) यूरोप का ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांख्यिकीय अध्ययन (1804)
(ii) यूरोप का धरातलीय, प्राकृतिक एवं आर्थिक संसाधनों का 6 मानचित्र (1807)
(iii) New Geography (1810) (इनकी यह रचना अप्रकाशित रही)
(iv) विधि तंत्र पर भौगोलिक पत्रिका में प्रकाशित कई शोध पत्र
(v) अर्द्ध कुण्डे (प्रथम खण्ड अफ्रिका पर, द्वितिय एशिया पर और तृतिय पूरे विश्व पर)

Scanned with CamScanner

कार्ल रिटर का विचार धारा :- रिटर पर हम्बोल्ट का काफी प्रभाव पड़ा लेकिन उन्होनें अपना स्वतंत्र चिन्तन किया उनके मुख्य विचार धारा निम्नलिखित है।

(I) ईश्वर वादी विचार धारा :- रिटर का मानना है कि पृथ्वी की रचना ईश्वर ने ही की है एवं मानव के शिक्षण एवं पोषण के लिये भूमि के रूप में दिया। हर महाद्वीप की आकृति ईश्वर ने दी।

(II) मानव स्वरूप :— मनुष्य के दृष्टि से उन्होनें प्रदेशों का अध्ययन किया पृथ्वी और मनुष्य में घनिष्ठ सम्बंध बताया — the Country works upoun its People and the people upoun the people.

(III) धरातलीय विभाजन :- अपनी प्रादेशिक अध्ययन की योजना को लागू करने के लिये उनके अर्द्ध कुण्डे में वर्णित वृहत धरातलीय या लक्षणीय इकाईयों अर्थात महाद्वीपों के व्यवस्थित अध्ययन हेतु सर्व प्रथम उन्होनें भौगोलिक लक्षणों के आधार पर प्रारम्भिक स्तर पर विभाजन करना विशेष महत्वपूर्ण माना। अतः इन्होनें विभिन्न भौतिक स्वरूपों में - पर्वत, पठार, मैदान, मध्यवर्ती क्षेत्र इन चार इकाइयों को सम्मिलित किया। ऐसी प्रत्येक धरातल वर्णन, भूमि का स्वरूप, जल प्रवाह, जलवायु, मुख्य उपज, जनसंख्या, एवं एतिहासिक घटनाओं को ध्यान में रखा।

(IV) मानचित्र विधि का उपयोग :— रिटर द्वारा आधुनिक भूगोल पर लिखा गया प्रथम ग्रन्थ यूरोप का भूगोल से सम्बंधित मानचित्र मुख्य ग्रन्थ के प्रकाशन के तीन वर्ष बाद 1807 में प्रकाशित हुआ। इन मानचित्र में भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का यूरोपीय भूतल पर चित्रण किया गया। यूरोप में स्वयं रिटर ने भ्रमण किया।

अतः रिटर ने भूगोल को क्रमिक अध्ययन की रूप रेखा दी। उन्होनें शुष्क क्षेत्र की जैविक दृश्य का वर्णन, महाद्वीपों का प्राकृतिक चित्रण तथा अन्य तथ्यों पर संगठित इकाई के रूप में प्रस्तुत करके भूगोल का उद्देश्य समझाया।

आलोचना :— रिटर के विचार धारा में बहुमुखी विवादस्पद वर्णन मिलते है। नये संसोध और शोध के क्रम में वे भूल में उन्होने पहले कहा कि स्थिरवाद और बहुरूपी विधि विचार आलोचना के पात्र बन गये। लोगों ने उन्हे आराम कुर्सी भूगोलवेत्ता माना जो ईश्वरीय शक्ति पर ज्यादा विश्वास करते थे।

उपसंहार

हम अन्त में रिटर के भौगोलिक विचार धारा को देखते हुऐ कह सकते है कि वे भूगोल अधिष्ठता एवं निर्माण कर्ता थे। 18वी शदी जो भौगोलिक विचार धारा विद्यमान थे उनके विचार धारा को संगठित करके भौगोलिक रूप दिया अनुभविक तुलनात्मक विधियों को स्थापित करके मानव के सम्बंधो की विधि बतायी।

Scanned with CamScanner